बाप भी वैसे ही समझाते हैं। सतयुग में सुख ही सुख हैं। अभी है संगम युग। कोर्ट से वे छुट्टी भी न ले सकेंगे। पीनी आदि कुछ भी कर न सकेंगे। बुधि भी ऐसी कहती है हम बाप के बच्चे पार्टधारी हैं। पिछाड़ी में विनाश जरूर होना है। कितने अच्छे2 सामान बनाते रहते हैं। जो कुछ भी तकलीफ न हो। बहुत सुखाला मौत हो जाता। हास्पीटल आदि की दरकार ही नहीं। 2। जन्म सर्जन होता नहीं। न बैरीस्टर न जज। धर्मराज होगा ही नहीं। बच्चों को खुशी भी देते हैं, धीर्य भी देते हैं। शाहुंकारों के लिए तो यहां ही स्वर्ग हैं। यहां राजाई के हकदार गरीब ही बनते हैं। शाहुकारों को धन-दौलत बाल-बच्चों से ही ममत्व निकाल न सके। महल एरोपलेन बच्चे आदि याद आते हैं रहेंगे। वहां की तो चीज़ ही और होगी। सायंस दान भी क्या करते हैं एक हार्ट निकाल दूसरी डालते हैं। फिर भी हिम्मत तो करते हैं ना। 5-6 मास चल पड़ता हैं। क्योंकि आर्टीफिसीयल चीज़ हैं ना। भारत सच्च खण्ड था पुराना को झूठ खण्ड कहा जाता है। वहां तो सभी कुछ नया ही होता है। यहां तो झूठ विगर चल न सके। कोई2 बहुत थोड़े हैं तो सच्च पर ही चलते हैं। बच्चों के लिए भी गायन है अति ईन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो। बाप ज्ञान का सागर पवित्रताका सागर है ना। कहते हैं बच्चों अभी मैं आया हूं अभीतुमको पवित्र बनना पड़े। तुम आये हो यह (ल०ना०) बनने के लिए। तुम से कोई छीन न सके। बना बनाया ड्रामा है। ईश्वर की कृपा की बात ही नहीं। उनको आना ही हैं बच्चों को पढ़ाने। कल्प2 पढ़ाते हैं। पावन बनाना भी पढ़ाई का एक अंग है। अभी तुम सभी स्टूडेंट्स हो। अभी यह नाटक पूरा होता है। यह एक ही खेल है। सांवरा से गोरा बनते हैं। कल्प का संगम युग है यह। इस पढ़ाई से कितना सुख मिलता है। तो पूरा अटेन्शन देना है। रहना भी अपने घर में हैं। कृष्ण को याद करने से पाप कटेंगे नहीं। कितना नुकसान हो जाता। वह सभी हैं भक्ति- मार्ग। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रि क्लास 1-6-68 ओमशान्ति

स्त्रानी बच्चों ने अपने सर्विस का समाचार सुनाया। महाबलेश्वर का। किस ने यह पूछा? (बाप दादा ने) बाप नेदादा द्वारा पूछा तो गोया बाप दादा ने पूछा। यह तो बच्चों को निश्चय है जो ब्राहमण हैं। बाकी जो ब्राहमण नहीं उनको निश्चय नहीं हैं। हो सकता है अगर अच्छी तकदीर हो तो समझ सकते हैं वरना बेहद का बाप और हद का दादा। क्योंकि बेहद का बाप आते हैं हद के दादा पास। अनेक बार अभी जिनको निश्चय है यह बेहद का बाप है थोड़े ही रोज के लिए आये हैं नई दुनिया स्वर्ग बनाने लिए। तो जरूर पुरुषार्थ कर बन सकते हैं। परन्तु तकदीर में न है तो कब निश्चय नहीं होता। यह बेहद का बाबा हैं। जिससे ही और सभी वर्सा लेते हैं। अथवा सूर्यवंशी चन्द्रवंशी ने वर्सा लिया है हम भी पुरुषार्थ कर क्यों न लेवें। परन्तु तकदीर में नहीं है तोबुधि में बैठता ही नहीं। सुनते भी हैं परन्तु कान से निकल जाता। समझ जाते हैं बाबा राजधानी स्थापन करते हैं। इसमें हर मर्तवे के होते हैं सो भी जन्म-जन्मान्तर, कल्प-कल्पान्तर की बात है। तो क्यों नहीं हम पुरुषार्थ करें। ऐसे को फालो करें कदमव कदम जिसके कदम में पदम हो। यह बनने का है। हम भी फालो कर क्यों नहीं विजय माला के दाना बन जावें। परन्तु ड्रामा में नहीं है। तो क्या करेंगे। या उनके पार्ट में ही नहीं तो इतना पुरुषार्थ भी नहीं कर सकते हैं। जिनका पार्ट है वह पुरुषार्थ भी करते रहते हैं। बहुत2 मीठे बन जाते हैं। बाप बहुत मीठा है ना। यह भी जानते हो सभी से मुलमी का गुणा हम ही बनते हैं। फीलिंग आती है। हम तुच्छ बुधि थे। अभी बाप बिल्कुल स्वच्छ बुधि बनाते हैं। ऐसा कब किसको दुःख नहीं देगा। क्यों कि बाप किसको भी दुःख नहीं देते हैं। अपनी ग्रहाचारी से ही अपने को दुःखी अशान्त करते हैं। बाप नहीं दे सकता। बाप तो सब की सदगति करने आये हैं। कोई तंग भी करते हैं तो भी [illegible] है तो सभी को जाना है। जो तंग करते हैं सज़ाएं भी वह खाते हैं। बाप तो है सुख दाता। बेहद का [illegible]

बापआयाहुआ है। यह निश्चय है हम किसको भी दुःख नहीं देंगे। पुरुषार्थ करते रहते हैं। अभी वह अवस्था नहीं है। बेकायदे काम तो करते आये हैं। पापात्मा बनते आये हैं। बाप कहते हैं सब सx गन्दा काम है विकार का। यह है विकारीदुनिया। वह है निर्विकारी दुनिया। वायसलेस वर्ल्ड, विकार वर्ल्ड कहा जाता है ना। यह अक्षर अभी तुम्हारी बुधि में है। यह सबक बाप ही पढ़ाते हैं। वेद-शास्त्र आद भल पढ़े परन्तु उन से फायदा कुछ भी नहीं। सिवाय नुकसान के। इस पढ़ाई में नुकसान की कोई बात नहीं। शान्तिधाम तो चले जावेंगे ना। कहते हैं मीठे2 बच्चेपतित तो हो। बुलाते हो हे पतित पावन आओ। पावन थे। अभी नहीं हैं। फील करते हम पतित थे जरूर। सन्यासी भी समझते थे हम पतित थे। कोई2 नास्तिक भी मानते नहीं। परन्तु पुनर्जन्म बहुत होता जरूर। कई नास्तिक होते हैं कुछ भी नहीं समझते। यहां तो तुम बच्चे समझते हो कोई विकार करना है। किसको भी दुःख न देना है। फिर भी माया कुछ न कुछ विकर्म करा देती है। जब तक पढ़ाई हो तब तक युध चालू हो है। यह भी जरूर है माया कम नहीं है। जितनी जx= ताकत बाप में है उतनी ताकत माया में है। बड़ी जबरदस्त है। सभी हैं युद के मैदान में। तो आधा2 होता होगा। बहुत थोड़े मार्जिन रहती है। बाकी हरा देते हैं। बच्चे जो अन्यन्य हैं उनको अपनी ऊपर बड़ी खबरदारी रखना है। ऐसा कर्तव्य न करे जो नाम बदनाम हो। सुप्रीम बाप सुप्रीम टीचर, सुप्रीम सद्गुरु भी है। बच्चों को यह भी पक्का है। बाप कहते हैं मैं इस रथ में प्रवेश कर रचयिता और रचना का परिचय देता हूं। ईश्वर का परिचय कब कोई दे न सके। यह शिक्षा कब कोई दे न सके। बाप कहते हैं बच्चे मामेकं याद करो तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। बच्चे भी समझते हैं गान्दी है। हमारी गफ्लत है जो हम दौड़ी नहीं पहन सकते हैं। फील कर सकते हैं। और है बहुत ईजी। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाबा बाबा है परमपिता आत्मा कहती है ना। गाया भी जाता है शिव रात्रि। अभी तुम समझते हो रात्रि क्यों कहते हैं। यह तो सिवाय बाप के कोई समझा न सके। सभी को कहते हैं हम राजयोग सीख रहे हैं। यह भी समझाया है हर जन्म में फिचर्म भुगत2। कृष्ण तो फिर सतयुग में ही हो सकता है। तो बाप कितना रोज समझाते रहते हैं। समझने की कार्जिन है। आगे चल कर बाप बतलाते रहेंगे। समझते रहेंगे। यह भी तुम जानते हो दिन प्रति दिन बहुत समझ में आता जाता। हम समझते जाते हैं। बाप कहते हैं तुम बहुत बेसमझ बन गये हो। यह भी तुमको पता नहीं है हम कितना होशियार थे। अब बाप कहते हैं तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो मैं समझाता हूं। बाप बताते हैं। तुम्हारे भी जो अन्यन्य हैं पण्डा बन ले आते हैं तो स्टुडन्ट समझते हैं यह होशियार है। हमको भी ऐसा होशियार बनना है। हमसिन्स का कल्याण हो। पुरुषार्थ में लगा रहना चाहिए। तुम भी अच्छा होx आबू के बच्चों की तकदीर जगावें। अकेला बाप थोड़े ही काम करते हैं। तुम भी उनके बच्चे मददगार हो। अच्छा सुबह की निष्टा यहां के लिए है। कहाx बाहर में कोई को बहx= बाहर से आने लिए नहीं कहना। सेन्टर पर रहने वाले भल करसकते हैं। यह है अपने को पावन बनाने की युक्ति। बाप कहते हैं अपने को देखते रहो। फिर तुम समझ सकते हो कितना होना चाहिए। कहेंगे नहीं। हम पैसे हो जावेंगे। ड्रामा अनुसार टाईम मुकर्रर है। जब कर्मातीत अवस्था होगी और भक्ति का समय पूरा होगा तब। बाकी तो सहन करना ही है। अत्याचार आद होते हैं। वह भी देख रहे हो। सुपनखा पुतना यह सभी इस समय के नाम द्रौपदी पुकारती है। अबलाओं पर अत्याचार होता है ना। बाप श्री मत देते रहते हैं।

सारी दुनिया में तुम सितारे हो लक्कीएस्ट इन दी वर्ल्ड।

अच्छा मीठे-मीठे रूहानी सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

*:***:*